www.dsresearchcentre.com

प्राचीन भारतीय आयुर्वेद पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा प्राप्त करने वाले

कैन्सर रोगियों के लिये सामान्य सलाह और जानकारियाँ !

D.S. Research Centre

LET US SAVE OUR WORLD FROM CANCER

An "ISO 9001:2015" Organization

#togetherwecan #defeatcancer

कैन्सर पर विजय के लिए दुहरी लड़ाई आवश्यक.

जहाँ कैन्सर कोशिकाएँ मानव शरीर के स्वास्थ्य को तेजी से कमजोर करती हैं वहीं कैन्सरीय ट्यूमर रोगी के जीवन को बहुत पीड़ादायक बना देते हैं। अतः कैन्सर – चिकित्सा के समानान्तर सर्जरी, रेडियोथेरापी, और संयमित किमोथेरापी की सहायता से कैन्सर के लक्षणों को नियंत्रित करते रहना भी उतना ही अनिवार्य होगा।

डॉ. उमाशंकर तिवारी व प्रो. शिवा शंकर त्रिवेदी
प्राचीन आयुर्वेद पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा के जनक,
संस्थापक-डी. एस. रिसर्च सेण्टर

कैन्सर हारने लगा है

डी.एस. रिसर्च सेण्टर प्राचीन आयुर्वेद पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा का उत्कृष्ट संस्थान है। देश में कैन्सर चिकित्सा के लिए समर्पित इसके ६ केन्द्र वाराणसी, कोलकाता, गुवाहाटी, बेंगलुरू, मुंबई और हैदराबाद, में है।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर यहाँ आने वाले कैन्सर के उन हताश रोगियों के लिए उम्मीद की किरण है कि कैन्सर पर जीत हासिल कर खुशहाल जिंदगी में वापसी की जा सकती है।

क्या क्या अपेक्षा रखें

कैन्सर की अवस्था और उसके इलाज को समझना

- कैन्सर रोगी और उनके परिजन इस बात का ध्यान रखें कि केंद्र किसी तरह का शर्तिया इलाज नहीं करता । प्राचीन आयुर्वेदिक पद्धति पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा द्वारा कैन्सर की सफल चिकित्सा के जो परिणाम हमारे सामने हैं , वे इस बात की पुष्टि कर देते है कि रोगी के चिकित्सा को प्रभावी बनाने के लिए दोनों मोर्चों पर विवेक सम्मत लड़ाई लडनी होगी ।प्राचीन आयुर्वेदिक पद्धति पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा को नियमित करने से कैन्सर के खिलाफ लड़ी जाने वाली लडाई की दशा- दिशा के परिणाम रोगी के पक्ष में उमडते हैं ।
- कैन्सर प्रभावित अंगो के हिसाब से रोगी को अलग-अलक तरह की समस्यायें इलाज के दौरान आ सकती है, जिसका निराकरण प्रचलित चिकित्सा साधनों से करना पड़ सकता है। हर कैन्सर रोगी अलग-अलग अंगों के कैन्सर के प्रति अलग-अलग तरीकों से प्रभावित होता है इसलिए हम किसी को भी यह पहले से नहीं बता सकते कि पोषक ऊर्जा चिकित्सा प्रारम्भ करने के बाद कितने दिनों में अपना प्रभाव दिखाएगी ।
- प्राचीन आयुर्वेदिक पद्धति पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा के दौरान रोगी की स्वास्थ्य से सम्बन्धित सुचनाएं अथवा तुलनात्मक सुधार की जानकारियों समय-समय पर ईमेल या पत्र के माध्यम से भेजते रहे, इस तरह की सुचनाएं फोन से या मौखिक रूप से न दे। आप द्वारा दी गयी रिपोर्ट के आधार पर ही चिकित्सा का निर्धारण किया जाता है। अतः पूरी रिपोर्ट सावधानी पूर्वक तैयार करके भेजें ।

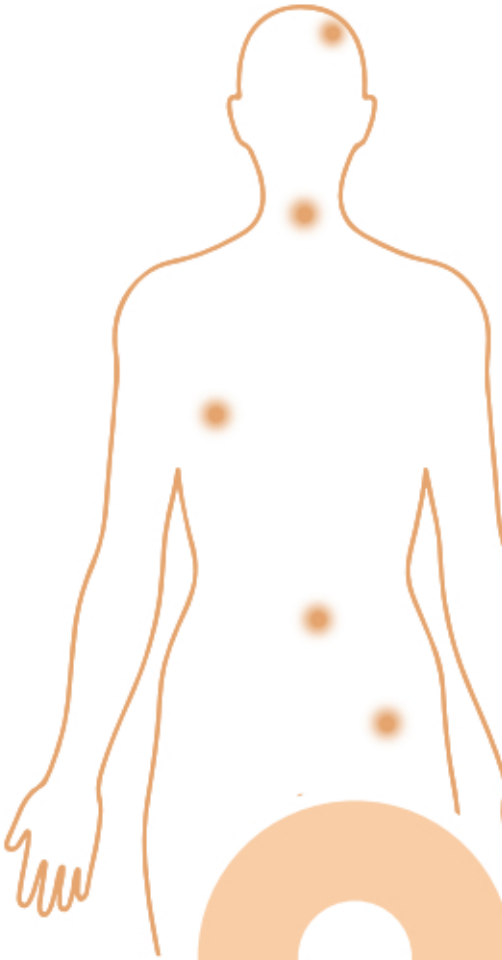

- प्राचीन आयुर्वेदिक पद्धति पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा में नियमितता अनिवार्य है। यदि किसी कारणवश सेण्टर की चिकित्सा को दो-चार दिन बन्द करना पड़े तो आगे से उसी क्रम में चिकित्सा शुरू कर देना चाहिए। जहाँ से चिकित्सा का प्रयोग बन्द किया गया हो।

- यदि किसी को वैज्ञानिक ढंग से समझ में आ रहा हो कि केंद्र की प्राचीन आयुर्वेदिक पद्धति पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा से रोगी को लाभ नहीं हो रहा है तो वह इसको बन्द कर सकता है। परन्तु यह निर्णय लेने के पूर्व केंद्र से एक बार सम्पर्क करना उचित रहता है। केंद्र आपको वैज्ञानिक और उचित परामर्श देगा। जब तक रोगी को पूर्ण आराम ना हो, चिकित्सा बंद ना करे और समय-समय पर किसी नजदीकी अस्पताल या जाँच केंद्र से रोगी की अवस्था की जाँच कराते रहें।

- इलाज के दौरान समय-समय पर आपके स्वास्थ्य के अनुसार दवाइयों में परिवर्तन किये जा सकते है। इलाज के दौरान हमारे लिये यह भी जानना जरूरी है कि आप हमारी दवाइयों के अलावा अन्य कौन-कौन सी दवाइयों का सेवन कर रहे हैं।

- कैन्सर के इलाज में गुजर रहे हर रोगी अपने लिए सर्वोत्तम परिणाम और जीवन-गुणवत्ता के साथ लंबे समय तक स्वस्थ व सामान्य जीवन की आशा करते हैं । लोगों को उपचार से जुड़ी जटिलताओं को समझना आवश्यक हैं। चिकित्सा की समय अवधि रोगी के स्वास्थ्य और रोग की स्थिति पर निर्भर करती है।

- अगर आपके मन में कोई प्रश्न या दुविधा है, तो उसे साझा करें। जो जानकारी और सहयोग केन्द्र से आपको मिल रहा है उस पर जागरूकतापूर्वक ध्यान दें। परिवार के सबसे करीबी उस व्यक्ति या सहयोगी को अपने साथ रखें जो रोगी की बेहतर देखभाल करता हो।

- यहाँ उपलब्ध विवरण पुस्तिका पढ़ें, साथ ही केन्द्र के सूचना डेस्क पर उपलब्ध व्यक्ति से इलाज की पूरी व्यवस्था और सुविधाओं के बारे में बात करें।

रोगी और उनके परिजनों के लिए-

- केन्द्र के निर्देशों को स्पष्टता से समझ ले, दवा लेने के बारे में विशिष्ट निर्देश लिखकर रखे जैसे कि दवा कब लेनी है कितने अंतराल से लेनी है और किस प्रकार से लेनी है।
- केन्द्र पर आने से पहले फोन द्वारा सूचना दे ताकि आपका समय बच सके।
- चिकित्सा की नियमितता बनाये रखने के लिए औषधि डाक/कुरियर द्वारा मंगाने के लिए आदेश तभी दे दिए जाएँ, जब पास में कम से कम उतने दिनों के लिए औषधि रहे, जितने दिन केन्द्र तक आदेश पहुंचने और आप के पास औषधि पहुंचने में लगे। प्रारम्भ करने के बाद औषधि की नियमितता और क्रम नहीं टूटना चाहिए।
- रोगी के आस-पास निराशापुर्ण वातावरण न बनाकर उत्साह तथा मनोबल बढ़ाने वाला वातावरण बनाए रखना चाहिए।
- कैन्सर रोगी और उनके परिजनों को चाहिए कि केंद्र पर उपलब्ध पुस्तक 'कैन्सर हारने लगा है' में लिखित कैन्सर विजेताओं की कहानियों का अध्ययन अवश्य करें। इससे एक तो कैन्सर रोगी में आत्मविश्वास बढ़ता है, दूसरे रोगी और उनके परिजनों को यह आशा बन जाती है कि अगर कोई रोगी इतने आक्रामक कैन्सर को हरा सकता है तो हम क्यों नहीं !

प्राचीन आयुर्वेद पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा के बारे में

प्राचीन आयुर्वेद पर आधारित पोषक ऊर्जा का निर्माण प्राकृतिक मानवीय भोज्यों की पोषक ऊर्जा से होता है। स्वास्थ्य पर इसका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। अनुसंधान-प्रगति के विभिन्न चरणों में पोषक ऊर्जा का परीक्षण करके देखा जा चुका है, सर्वत्र यह बात सामने आयी है कि यह ऊर्जा निरापद होती है, जीवनी शक्ति का विकास करती है, और स्वास्थ्य का विचलन दूर करती है।

चिकित्सा का आधार पोषक ऊर्जा है अतः विष औषधियो की भाँति यह कैन्सर कोशिकाओं को सीधे नहीं मारती, यह उस व्याधि पर नियंत्रण स्थापित करती है, जो बार बार कैन्सर कोशिकाओं तथा ट्यूमरों को जन्म देती है, और उनके अस्तित्व एवं बढ़ाव को प्रोत्साहित करती है।

यह मानव शरीर की सामान्य कोशिकाओं का विचलन दूर करके उन्हें नियमित और ओजपूर्ण बनाती है, जिससे कैन्सर की परिस्थिति क्षीण होती जाती है और कैन्सर कोशिकाओं का पोषण कमजोर होता जाता है। विचलन समाप्त होने से कैन्सर का आधार टूट जाता है और पोषण स्रोत के अभाव में कैन्सर कोशिकाओं का अस्तित्व मिटने लगता है। अगर ट्यूमरों की स्थिति खतरनाक हो, तो किसी चिकित्सक से सहयोग ले लेना चाहिए। आकस्मिक स्वास्थ्य संकट के समय किसी अस्पताल से अवश्य सहायता लेनी चाहिए।

रोगी के किस आपात अवस्था में प्रचलित चिकित्सा की सहायता लेना अनिवार्य है !

कैन्सर रोगियों के रोग-लक्षणों की चिकित्सा में भी तीव्र औषधियों के प्रयोग से कैन्सर बहुत उग्र और आक्रामक हो जाता है, किन्तु कैन्सर कोशिकाओं और अर्बुदो से होने वाले कष्टों के तात्कालिक शमन के लिए इन्हे स्वीकार करना पड़ता है।प्राचीन आयुर्वेद पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा के अंतर्गत आने वाले रोगियों या उनके परिजनों को निर्देश दिया जाता है की चिकित्सा के साथ-साथ वे रोगी के जीवन की गुडवत्ता को सर्वोच्च प्राथमिकता दें , आपात स्थिति में प्रचलित चिकित्सा की मदद अनिवार्य है।

जब दर्द असहनीय हो

- तीव्र दर्द होने पर डाक्टर की सलाह से जितना आवश्यक हो, दर्द कम करने की दवा ली जा सकती है। लेकिन ध्यान रहे अधिक दर्द निवारक दवाइयों के सेवन से अन्य तरह की समस्याएं पैदा हो जाती हैं।
- दर्द निवारक दवाइयां सिर्फ दर्द के संकेतों को दिमाग तक नही जाने देती, बीमारी को नियंत्रित करने मे उनका कोई योगदान नही होता है।

जब अत्यधिक कमजोरी और थकान का अनुभव हो !

- कैन्सर के कारण आने वाली कमजोरी और थकान कैन्सर के दुष्प्रभावों में से एक है। कैन्सर की उग्रावस्था में कई बार कैन्सर के ट्यूमर एवं कोशिकाओं को समाप्त करने के प्रयास में प्रयुक्त चिकित्सा शरीर के विभिन्न हिस्सों में बनने वाला पानी, दर्द, नींद एवं भूख न लगने की समस्याएं भी रोगी को कमजोरी की दिशा में ले जाती हैं।
- ऐसी स्थिति में योग्य चिकित्सक की सहायता से कमजोरी को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

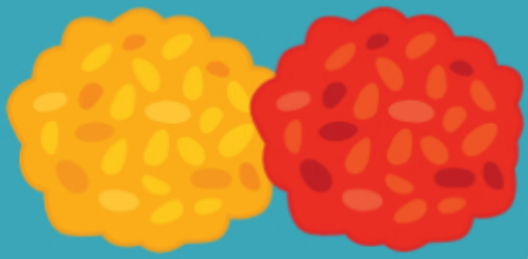

जब घाव और ट्यूमर के कारण परेशानी हो

- जब किसी रोगी को कैन्सर के कारण कहीं ट्यूमर अथवा घाव हो जाये, तो उससे संबंधित परेशानी के लिए डॉक्टर अथवा अस्पताल की मदद ले लेनी चाहिए। बढ़ते हुए ट्यूमर को सर्जरी से हटाया जा सकता है या रेडिएशन चिकित्सा द्वारा संकुचित किया जा सकता है, प्रायःदेखा गया है कि उन्न अवस्था वाले कैन्सर में बढ़ते ट्यूमर के कारण रोगी के रक्त वाहिका का अवरुद्ध होना, रीढ़ की हड्डी को प्रभावित होना या न ठीक होने वाले घाव आदि रोग की उग्रता को बढ़ाते हैं फलतः रोगी की क्वालिटी ऑफ़ लाइफ प्रभावित होती है।
- कैन्सर में की जाने वाली सर्जरी का लक्ष्य ट्यूमर के कारण होने वाले दुष्प्रभावों को दूर करना है। यदि रोगी को ट्यूमर है तो प्राचीन आयुर्वेद पर आधारित पोषक ऊर्जा चिकित्सा के साथ साथ सर्जरी करा लेने की सलाह दी जाती है यह प्रक्रिया कैन्सर रोगी के जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकती है। कई रोगिओं में देखा गया है कि कैन्सर में सर्जरी के पूर्व कुछ महीनो तक इस चिकित्सा का प्रयोग रोगी के स्वास्थय के पक्ष में होता है।

जब शरीर के किसी हिस्से में पानी भर जाये या एडिमा की स्थिति हो

ब्रेन, लीवर, पेट, ओवरी आदि के कैन्सर रोगियों को अक्सर पानी एकत्र होने की समस्या से जूझना पड़ता है, यह पानी साधारण पानी नहीं होता बल्कि यह शरीर की कोशिकाओं द्वारा छोड़ा गया पानी होता है। इसकी अधिकता कई तरह की समस्याएं खड़ी कर देती है। ऐसी स्थिति में पानी से सम्बन्धित किसी भी समस्या के लिए कुशल चिकित्सक अथवा अस्पताल की मदद लेनी चाहिए।

जब लंग्स (फेफड़े) में पानी एकत्र हो

लंग्स कैन्सर के रोगी को कई बार लंग्स में पानी भर जाता है, साथ ही साँस फूलना, खाँसी, कफ एवं सीने में दर्द की समस्याएं आती है। विशेष परिस्थिति में कुशल चिकित्सक अथवा अस्पताल की मदद अवश्य ले।

जब श्वाँस अवरुद्ध होने की स्थिति हो

गले/स्वर एवं श्वाँस नली के कैन्सर के रोगियो को कई बार श्वांस अवरूद्ध होने लगती है। ऐसी दशा में किसी कुशल सर्जन से श्वाँस नली ट्रेकियोस्टोमी) लगवा लेनी चाहिए।

जब कैन्सर रोगी को फीडिंग ट्यूब की आवश्यकता हो

- यदि अन्ननली के कैन्सर का रोगी तरल भोजन भी लेने की हालत में न हो तो किसी कुशल सर्जन से फीडिंग पाइप लगवा लेनी चाहिए। इस पाइप के द्वारा रोगी का भोजन पेट में पहुँचाया जा सकता है। केंद्र की औषधियाँ तथा अन्य औषधियाँ पानी में घोलकर इसी पाइप के द्वारा दी जा सकती हैं।

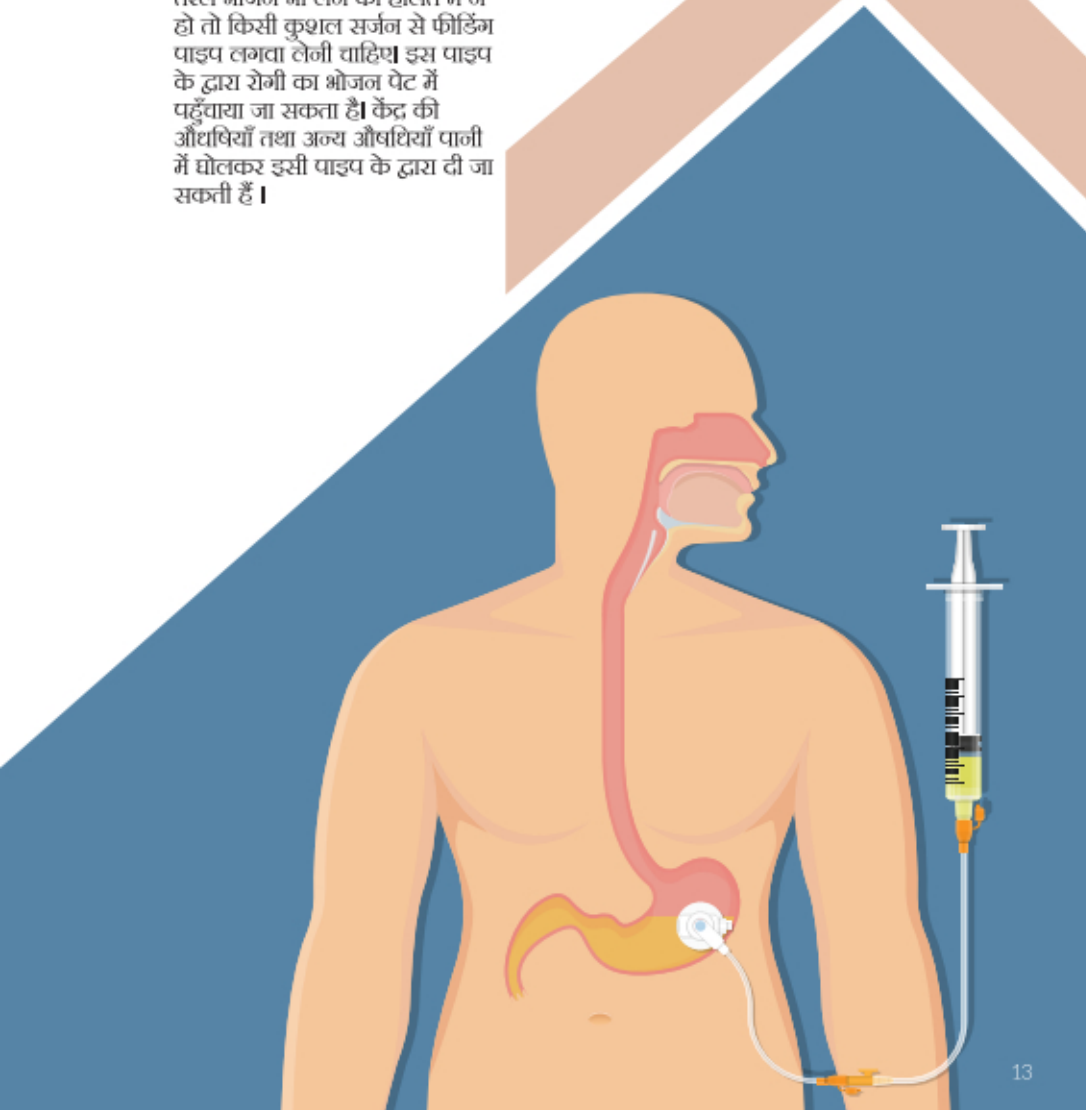

जब पीलिया (आब्सट्रस्टिन जाँडिस) की स्थिति हो

- लीवर, गाल ब्लैडर, पैंक्रियाज, सी. बी. डी. और स्पिलीन आदि के कैन्सर रोगियों के सामने पाचन सम्बन्धी समस्याएँ, उल्टी होना, पीलिया हो जाना, दर्द होना आदि समस्याएँ आती रहती हैं। इन रोगियों की पीलिया आब्स्ट्रक्शन के कारण होती है, इसलिए पीलिया की दवा इस पर काम नहीं करती।
- पीलिया की अधिकता के दौरान बाईपास सर्जरी कराकर एक ट्यूब लगाकर पित्त को बाहर करने, या लीवर में स्टैन्ट लगाकर अवरुद्ध पित्त नली का पित्त साफ करने और पीलिया के लक्षणों को दूर करने की व्यवस्था कर दी जाती है। इससे पीलिया में राहत मिल जाती है। लीवर कैन्सर के रोगी के शरीर का तापमान प्रायः दोपहर से आधी रात तक अधिक हो जाता है। सौ डिग्री से ऊपर तापमान होने पर ही बुखार की दवा लेनी चाहिए। जब रोग पर काबू पाने की स्थिति बनती है तब पीलिया और तापमान की अधिकता से भी राहत मिल जाती है।

जब रक्त कैन्सर की अवस्था में आपात स्थिति हो

- **रक्त कैन्सर** के रोगियों को अक्सर शरीर में दर्द, सूजन, कमजोरी, मुँह से खून आना जैसी समस्याएँ आती रहती हैं। ऐसी स्थिति में बिना हिचकिचाए किसी अस्पताल अथवा चिकित्सक की मदद ले लेनी चाहिए।
- **ए. एम. एल.(AML)** और **ए. एल. एल. (ALL)** कैन्सर रोगियों के सामने अचानक आपात स्थिति आ सकती है इसलिए इन्हें किसी अच्छे अस्पताल के आसपास रखना चाहिए। जब भी कोई आपात स्थिति आ जाय तुरन्त किसी अस्पताल की मदद लेनी चाहिए। सेण्टर की चिकित्सा का सेवन करने के साथ ही साथ ब्लड काउण्ट सही रखने के लिए भी डाक्टर अथवा अस्पताल की सहायता लेते रहना चाहिए।
- **सी. एल. एल. (CLL)** और **सी. एम. एल (CML)** के रोगियों को चाहिए कि सेण्टर की औषधि का प्रयोग तो करें ही, साथ में जब **डब्लू, बी. सी. (WBC)** काउण्ट साठ हजार से ऊपर जाने लगे तो उचित मैंटेनेंस थेरेपी के द्वारा इसे मैनेज करें। काउण्ट जब बीस हजार से नीचे आने लगे तब इस मैंटेनेंस थेरेपी का प्रयोग बन्द कर दें। इस तरह की प्रक्रिया अपनाने से आगे चलकर एलोपैथिक दवा की निर्भरता से बचा जा सकता है।

जब हॉजकिंस या नॉन हॉजकिंस डिजीज में आपात स्थिति हो !

हॉजकिंस या नॉन हॉजकिंस डिजीज के रोगियों को सामान्यत: शरीर में गाँठें या नोड्स की समस्या होती है इसमें पोषक ऊर्जा चिकित्सा के साथ-साथ आवश्यकता अनुसार कैन्सर विशेषज्ञ की मदद ली जा सकती है।

जब ब्रेन कैन्सर में आपात स्थिति आये

ब्रेन कैन्सर के रोगियों को प्रायः उल्टी होने, स्मृति भ्रम होने और शरीर के अंगों के पैरालाइज होने की शिकायत हो जाती है। आमतौर पर इन समस्याओं का कोई तुरन्त समाधान नहीं हो पाता। फिर भी इन्हें किसी अच्छे चिकित्सक की देखरेख में रखना चाहिए।

प्रोस्टेट, सारकोमा (हड्डी), मल्टिपल मायलोमा और हड्डी से जुड़े अन्य कैन्सर के रोगियों के लिए

- हड्डियों के कैन्सर रोगियों को शारीरिक तनाव तथा परिश्रम से बचना चाहिए। रुग्ण अस्थियों के क्षेत्र में जोर लगाकर मालिश न करें। अधिक चलने फिरने और शारीरिक परिश्रम से बचना चाहिए। दर्द -निवारक औषधि का व्यवहार तीव्र दर्द होने पर ही करें।

प्रोस्टेट,किडनी, युरिनरी ब्लैडर

- इन रोगियों में प्राय: पेशाब का रूकना, रक्त आना, जलन और दर्द की समस्या हो सकती है, ऐसी स्थिति में योग्य चिकित्सक या अस्पताल की मदद ले लेनी चाहिए।
- युरिनरी ब्लैडर के रोगियों को चिकित्सा चलते समय भी कई बार रक्तस्राव की समस्या आ सकती है। ऐसी स्थिति में कैन्सर अस्पताल की मदद ले लेनी चाहिए।

हमारे कार्य कलापों के बारे में आपका सुझाव महत्वपूर्ण हैं !

यह पुस्तिका कैन्सर रोगियों और उनके परिजनों की मदद के लिए तैयार की गई है, जिसके द्वारा वे डी. एस. रिसर्च सेण्टर से चिकित्सा के दौरान भली भांति जुड़ सकें। हमारा समूह पूरी निष्ठा से समर्पित है उन लोगों के लिये जो कैन्सर रोग से ग्रसित हैं। हम उनकी हर संभव सहायता को तत्पर रहते हैं।

रोगी का कैन्सर शुरुआती दिनों का हो या काफी फैल चुका हो, हमें उम्मीद है कि यह पुस्तिका आपके सवालों के जवाब पाने में मदद करेगी। आपके अमूल्य विचार हमें आगे के दिनों में इसको और बेहतर बनाने में मदद करेंगे।

हम आपके विचारों और टिप्पणियों का स्वागत करते हैं। आप प्रश्नों को ईमेल या पत्राचार द्वारा भेज सकते हैं। अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें जिससे हम अपनी कार्य क्षमता को और बेहतर बना सकें तथा अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे सकें। आपके दिये सुझाव हमारे कर्मचारियों के प्रोत्साहन के लिये सकारात्मक सिद्ध होंगे।हमारा मकसद है कैन्सर रोगियों की सहायता करना ताकि वे कैन्सर के उपचार और रखरखाव के बारे में बेहतर ढंग से समझ सकें और अपनी बात साझा कर सकें।

कैन्सर के बारे में अधिक जानकारी और भावनात्मक मदद के लिए हमें ८१३०५९४१४१ पर कॉल करें या infodsresearchcentre.org पर लिखें।

जब आपको हमारी आवश्यकता हो तो हम मौजूद हैं।

असलियत है कि कैन्सर को केवल कैन्सर रोगी ही नहीं भोग रहा है। कैन्सर के आतंक के साये में पूरा मानव समाज गुजर रहा है। इस साये ने मानव-जीवन की गुणवत्ता में सिहरन पैदा कर दी है । कैन्सर आज मानव-समाज की बहुत वजनी चिन्ता है। प्रायः हर समझदार आदमी कैन्सर के अहसास से पीड़ित है। यह जीवनबोध की गुणवत्ता का प्रत्यक्ष ह्रास है। ''कैन्सर हारने लगा है'' पुस्तक जब समाज में उतरकर ठोस सबूतों के साथ सन्देश देगी कि कैन्सर की सफल चिकित्सा भी सम्भव है और उसके प्रतिषेध की भी विपुल संभावनाएँ हैं, तो पूरे समाज की चिन्ता और कैन्सर के नाम पर होने वाले आतंक का बोझ सिर से उतर जाएगा। प्रत्येक विज्ञान कहेगा कि अस्तित्व की चिन्ता का बोझ उतरना जीवन की गुणवत्ता का सीधा उठाव और उन्नयन है।

-प्रो. शिवा शंकर त्रिवेदी

(संस्थापक एवं वैज्ञानिक) डी. एस. रिसर्च सेण्टर

''कैन्सर हारने लगा है'' पुस्तक से

D.S. Research Centre
LET US SAVE OUR WORLD FROM CANCER
An 'ISO 9001:2015' Organization

+91 81305 94141
info@dsresearchcentre.org

Follow us on:

बंगळुरू | गुवाहाटी | हैदराबाद | कोलकाता | मुंबई | वाराणसी

Disclaimer: The information provided in this booklet is for educational purposes only and is not intended to be a substitute for professional medical advice, diagnosis, or treatment. ¬lways seek the advice of your physician or other qualified healthcare provider with any questions you may have regarding a medical condition. Never disregard professional medical advice or delay in seeking it because of something you have read in this booklet.